सर्व शिक्षा अभियान के प्रशिक्षण कार्यक्रम के अनुभव

शहनाज़ ज़ाकिर

सर्व शिक्षा अभियान (SSA) द्वारा सरकारी विद्यालय में पढ़ाने वाले शिक्षकों को हर वर्ष छह दिन का प्रशिक्षण दिया जाता है। जिससे शिक्षा में हो रहे बदलाव जैसे सीसीई, परीक्षा परिणाम में सुधार और कक्षा में प्रभावी शिक्षण जैसे मुद्दों को शिक्षकों तक पहुँचाया जा सके। अनुदान प्राप्त संस्थाओं के समायोजन से सरकारी सेवा में आने के बाद मुझे भी पहली बार सर्व शिक्षा अभियान के प्रशिक्षण में जाने का मौक़ा मिला। विद्या भवन में 14 वर्ष के कार्यकाल में कई बार प्रशिक्षण के अवसर मिले थे। वही छवि मन में लेकर मैं उत्साह से सर्व शिक्षा अभियान के प्रशिक्षण में पहुँची।

प्रशिक्षण छह दिन का था जिसमें तीन-तीन दिन दो विषय गणित व अँग्रेज़ी पर प्रतिभागियों को कार्य करना था। पहले दिन प्रशिक्षण स्थल पर पहुँचने में और रजिस्ट्रेशन कराने जैसे कामों में ही आधा समय निकल गया। इसके पश्चात जब बात गणित विषय पर प्रारम्भ हुई तो मास्टर ट्रेनर ने सबसे पहले समस्याएँ पूछी। जब सभी शिक्षकों ने समस्याएँ बतानी शुरू की तो वे भिन्न संख्या से लेकर इबारती सवाल और गिनती लिखने तक पहुँच गईं। परन्तु इन समस्याओं का हल तो किसी के पास नहीं था। ये समस्याएँ तो हर साल प्रशिक्षण में बताई जाती हैं और निराकरण कुछ नहीं होता। पढ़ाया और सिखाया कैसे जाए ये शिक्षकों को समझ में नहीं आता। सभी शिक्षक चाह रहे थे कि मास्टर ट्रेनर चर्चा को आगे बढ़ाएँ तो समस्याओं के कोई समाधान निकलें। परन्तु मास्टर ट्रेनर ऐसा नहीं कर पाए। उनके पास इन कक्षाओं का कोई अनुभव नहीं था और न ही कक्षा 1 से 5 की पाठ्यपुस्तकें ही उन्होंने देखी थीं। सो वे तो किसी प्रकार की चर्चा कर नहीं सके। उन्होंने फिर शिक्षकों से ही पूछा कि आप अपने अनुभव बताएँ कि जिनकी कक्षा में बच्चे ठीक-ठीक सवाल कर लेते हैं वे कैसे सिखाते हैं? अब गेंद फिर शिक्षकों के पाले में थी। शिक्षकों ने जो अनुभव बताए उनमें अधिकांश बातें बच्चों को किसी-न-किसी तरीक़े से रटाना था जिसे वे कुछ समय याद रख लेंगे लेकिन अगले वर्ष फिर सिखाना पड़ेगा। यानी पूरी बातचीत का कोई फ़ायदा नहीं मिल पा रहा था और मास्टर ट्रेनर पूरी प्रक्रिया में कोई सहयोग नहीं कर पा रहे थे।

अगले दो दिन में भी गणित विषय पर कोई ठोस कार्य नहीं हो सका क्योंकि समूह-कार्य में कोई एक-दो लोगों ने मिलकर चार्ट तैयार करके अपने विचार लिख दिए। अधिकतर साथी वार्तालाप में लगे रहे या अपने अन्य कार्य निपटाते रहे। समूह-कार्य में बने चार्ट रख दिए गए न कोई प्रस्तुतीकरण हुआ, न कोई सवाल-जवाब और न ही कोई चर्चा। क्योंकि मास्टर ट्रेनर तो लगता था ऐसी कोई तैयारी करके नहीं आए थे।

ऐसा ही समय पूरा हुआ सीसीई की डायरी भरने का। सीसीई की डायरी मास्टर ट्रेनर ने तो कभी देखी भी नहीं है ऐसा लगा। क्योंकि जो शिक्षक पिछले वर्ष से उस डायरी को भर रहे थे, उन्हीं से सारी बात पूछी गईं। जिनमें कई प्रश्नों के जवाब उनके पास भी नहीं थे। जैसे – डायरी में आप समूह की योजना कैसे लिखेंगे जो समूह आपने कक्षा में बनाए हैं, या अलग-अलग समूह के बच्चों का मूल्यांकन कैसे करेंगे, दो-तीन प्रश्न-पत्र बनाएँगे या एक ही तरह के प्रश्न-पत्र में सभी स्तर के सवाल होंगे आदि। इस डायरी से तो शिक्षक बेहद परेशान नज़र आए और प्रशिक्षण में भी कोई बात समझ में न आने से सभी बेहद नाराज़ थे। इस तरह गणित के शिक्षकों को अपनी कक्षा में बदलाव लाने और बच्चों को सिखाने के लिए कुछ नया हासिल नहीं हुआ।

अगले तीन दिन अँग्रेज़ी विषय के लिए थे। यह विषय मेरे लिए भी नया था। मेरे मन में भी बहुत सारे सवाल थे जिनके जवाब मुझे जानने थे। यहाँ जब मास्टर ट्रेनर ने परिचय सत्र के बाद बात प्रारम्भ की तो अँग्रेज़ी की समस्या और भी विकराल थी। अधिकांश शिक्षकों का मानना था कि बच्चों को पढ़ाएँ कैसे, उन्हें तो अँग्रेज़ी पढ़ना-लिखना आता ही नहीं? इसका जवाब भी मास्टर ट्रेनर ने शिक्षकों से ही माँगा। सभी का पूरा ज़ोर शब्दों की स्पेलिंग याद करवाने पर था। मैंने पूछा सर स्पेलिंग याद करने के बाद वे फटाफट अँग्रेज़ी पढ़ लेते हैं। वे चुप थे, कुछ शिक्षकों ने ना में सिर हिला दिए, कुछ शिक्षक कहने लगे यही तो समस्या है वे स्पेलिंग याद करते ही नहीं। मेरे मन में फिर सवाल उछल रहे थे। मैंने मास्टर ट्रेनर से पूछा कि पढ़ना-लिखना सिखाने से पहले भी तो कुछ

क्रियाएँ होती हैं जो भाषा सिखाने में मदद करती हैं। इस पर एक शिक्षक ने कहा जी सर भाषा सीखने में बोलना और सुनना एक ज़रूरी क्रिया है जो हमें बच्चों के साथ करनी चाहिए। इस पर सहमति जताते हुए शिक्षकों से मास्टर ट्रेनर ने चर्चा की कि उन्हें भी कक्षा में बच्चों के साथ अँग्रेज़ी में सरल वाक्य बोलने का प्रयास करना चाहिए जिससे पढ़ना सीखने में भी मदद मिल सकेगी।

अँग्रेज़ी विषय के समूह-कार्य में भी शिक्षकों ने कोई रुचि नहीं दिखाई। शिक्षकों ने पुस्तक से नकल कर कुछ चार्ट बना दिए जिस पर गम्भीरता से न कोई प्रस्तुति हुई और न ही चर्चा। ऐसा ही हाल सीसीई डायरी का भी हुआ। क्योंकि अँग्रेज़ी विषय में तो शिक्षक अलग-अलग समूहों की योजना समझ ही नहीं सके। इसलिए उन्होंने एक शिक्षक की भरी हुई डायरी की फोटो कॉपी ही करवा ली।

इस तरह शिक्षक पूरे प्रशिक्षण के दौरान वे तरीके ढूँढ़ते रहे जिसे अपनाकर वे स्कूल जाकर वापस अपने काम को आसानी से कर सकें।

अन्त में सुझाव माँगे जाने पर भी उनका कहना था कि कोई फ़ायदा नहीं ऐसे सुझाव देने से, इन पर कोई ध्यान देता नहीं, प्रशिक्षण में कोई सुधार तो होता नहीं। उनका कहना था कि हम तीन-चार साल से प्रशिक्षण में आ रहे हैं और छह दिन ख़राब होते हैं कोई लाभ नहीं होता जिसे अपनाकर हम अपने शिक्षण में सुधार कर सकें। इस प्रकार आरोप-प्रत्यारोप के साथ प्रशिक्षण समाप्त हुआ।

मैंने विद्यालय में (II ग्रेड) विज्ञान की अध्यापिका से पूछा आपका प्रशिक्षण कैसा रहा। उन्होंने कहा वैसे तो ठीक था। लेकिन हमें ये बात अच्छी सीखने को मिली कि कक्षा में पढ़ाते समय बच्चों की भागीदारी कैसे बढ़ाई जाए। मैंने पूछा आपका प्रशिक्षण कहाँ था, तो पता चला विद्या भवन में था। कुछ मास्टर ट्रेनर सरकारी विद्यालय से और कुछ विद्या भवन से यानी सरकारी और प्राइवेट साथ-साथ। उन्होंने कहा विद्या भवन के मास्टर ट्रेनर ने तो पाठ्यपुस्तक के पाठ तक हमें पढ़ाकर सिखाया।

अब मैं कुछ महत्त्वपूर्ण बातें ग़ैर-सरकारी शिक्षण संस्था में करवाई जाने वाली ट्रेनिंग के बारे में बताना चाहती हूँ। वहाँ प्रशिक्षण देने से पहले प्रशिक्षण देने वाले पूरी योजना बनाते थे कि कितने सत्र होंगे और उनमें किन-किन बिन्दुओं पर चर्चा की जाएगी। पूरे प्रशिक्षण के दौरान सभी सत्रों में खुली चर्चा होती थी जिसमें शिक्षक अपनी समस्याओं, अनुभवों व मतों को भी रखते। इसी तरह पूरी गम्भीरता से समूह-कार्य भी करवाया जाता था। समूह-कार्य का प्रस्तुतीकरण किया जाता जिसमें सभी समूह अपने-अपने विचार रखते। साथ ही अच्छे लेखकों के शिक्षा सम्बन्धी लेख भी पढ़ने को दिए जाते थे। जो शिक्षण के कई आयाम को समझने में मदद करते। ग्रीष्मावकाश में प्रशिक्षण में आना तो वहाँ भी शिक्षकों को बुरा लगता परन्तु प्रशिक्षण के बाद ऐसा नहीं लगा था कि कुछ नहीं हुआ, और समय बर्बाद हुआ। यानी प्रशिक्षण की सार्थकता तो थी।

मुझे सर्व शिक्षा अभियान के ग़ैर-सरकारी और सरकारी प्रशिक्षण में जो अन्तर समझ आया कि उसमें प्रशिक्षण देने वाले ज़्यादा गम्भीर थे, शिक्षकों की बात सुनते थे व ज़्यादा तैयारी करते थे। तो क्यों न सरकारी मास्टर ट्रेनर भी ज़्यादा गम्भीरता एवं तैयारी के साथ प्रशिक्षण दें।

shenazakir@gmail.com